International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिंदी लेखनी का विकास: देवनागरी से आधुनिक प्रयोग

डॉ अंजू अग्रवाल

सह आचार्य, हिंदी

बाबा गंगा दास राजकीय महिला महाविद्यालय, शाहपुरा (जयपुर)।

सार

देवनागरी भारतीय उपमहाद्वीप में प्रयुक्त प्राचीन ब्राह्मी लिपि पर आधारित बाएँ से दाएँ आबूगीदा है। यह प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी ईस्वी तक विकसित किया गया था और ७वीं शताब्दी ईस्वी तक नियमित उपयोग में था। देवनागरी लिपि, जिसमें १४ स्वर और ३३ व्यञ्जन सहित ४७ प्राथमिक वर्ण हैं, दुनिया में चौथी सबसे व्यापक रूप से अपनाई जाने वाली लेखन प्रणाली है, जिसका उपयोग १२० से अधिक भाषाओं के लिए किया जा रहा है। इस लिपि की शब्दावली भाषा के उच्चारण को दर्शाती है। रोमन लिपि के विपरीत, इस लिपि में अक्षर केस की कोई अवधारणा नहीं है। यह बाएँ से दाएँ लिखा गया है, चौकोर रूपरेखा के भीतर सममित गोल आकृतियों के लिए एक दृढ़ प्राथमिकता है, और एक क्षैतिज रेखा द्वारा पहचाना जा सकता है, जिसे शिरोरेखा के रूप में जाना जाता है, जो पूर्ण अक्षरों के शीर्ष के साथ चलती है।

खोजशब्द: *संरचनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक*

परिचय

एक सरसरी दृष्टि में, देवनागरी लिपि अन्य भारतीय लिपियों जैसे पूर्वी नागरी लिपि या गुरमुखी लिपि से अलग दिखाई देती है, लेकिन एक निकटतम अवलोकन से पता चलता है कि वे कोण और संरचनात्मक जोर को छोड़कर बहुत समान हैं। अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) जिसे शिरोरेखा कहते हैं। देवनागरी का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल अध्वव लिपि है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे- बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है।

भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू-ब-हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका विशेष मानकीकरण न किया जाये, जैसे आइट्रांस या IAST।

इसमें कुल ५२ अक्षर हैं, जिसमें १४ स्वर और ३८ व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अन्तस्थ-उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं। एक मत के अनुसार देवनगर (काशी) में प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं, परन्तु उच्चारण व वर्ण-क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं, क्योंकि वे सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं (उर्दू को छोड़कर)। इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यन्तरित किया जा सकता है। देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौन्दर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है।

देवनागरी' शब्द की व्युत्पत्ति

देवनागरी या नागरी नाम का प्रयोग "क्यों" प्रारम्भ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्तिनिमित्त क्या था- यह अब तक पूर्णतः निश्चित नहीं है।

(क) 'नागर' अपभ्रंश या गुजराती "नागर" ब्राह्मणों से उसका सम्बन्ध बताया गया है। पर दृढ़ प्रमाण के अभाव में यह मत सन्दिग्ध है।

(ख) दक्षिण में इसका प्राचीन नाम "नंदिनागरी" था। हो सकता है "नन्दिनागर" कोई स्थानसूचक हो और इस लिपि का उससे कुछ सम्बन्ध रहा हो।

(ग) यह भी हो सकता है कि "नागर" जन इसमें लिखा करते थे, अत: "नागरी" अभिधान पड़ा और जब संस्कृत के ग्रंथ भी इसमें लिखे जाने लगे तब "देवनागरी" भी कहा गया।

(घ) सांकेतिक चिह्नों या देवताओं की उपासना में प्रयुक्त त्रिकोण, चक्र आदि संकेतचिह्नों को "देवनागर" कहते थे। कालान्तर में नाम के प्रथमाक्षरों का उनसे बोध होने लगा और जिस लिपि में उनको स्थान मिला- वह 'देवनागरी' या 'नागरी' कही गई। इन सब पक्षों के मूल में कल्पना का प्राधान्य है, निश्चयात्मक प्रमाण अनुपलब्ध हैं।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से देवनागरी

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि अक्षरात्मक (सिलेबिक) लिपि मानी जाती है। लिपि के विकाससोपानों की दृष्टि से "चित्रात्मक", "भावात्मक" और "भावचित्रात्मक" लिपियों के अनंतर "अक्षरात्मक" स्तर की लिपियों का विकास माना जाता है। पाश्चात्य और अनेक भारतीय भाषाविज्ञानविज्ञों के मत से लिपि की अक्षरात्मक अवस्था के बाद अल्फाबेटिक (वर्णात्मक) अवस्था का विकास हुआ। सबसे विकसित अवस्था मानी गई है ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) लिपि की। "देवनागरी" को अक्षरात्मक इसलिए कहा जाता है कि इसके वर्ण- अक्षर (सिलेबिल) हैं- स्वर भी और व्यंजन भी। "क", "ख" आदि व्यंजन सस्वर हैं- अकारयुक्त हैं। वे केवल ध्वनियाँ नहीं हैं अपितु सस्वर अक्षर हैं। अत: ग्रीक, रोमन आदि वर्णमालाएँ हैं। परंतु यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि भारत की "ब्राह्मी" या

"भारती" वर्णमाला की ध्वनियों में व्यंजनों का "पाणिनि" ने वर्णसमाम्नाय के १४ सूत्रों में जो स्वरूप परिचय दिया है- उसके विषय में "पतंजलि" (द्वितीय शताब्दी ई.पू.) ने यह स्पष्ट बता दिया है कि व्यंजनों में संनियोजित "अकार" स्वर का उपयोग केवल उच्चारण के उद्देश्य से है। वह तत्वतः वर्ण का अंग नहीं है। इस दृष्टि से विचार करते हुए कहा जा सकता है कि इस लिपि की वर्णमाला तत्वतः ध्वन्यात्मक है, अक्षरात्मक नहीं।

उद्देश्य

1. देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास का अध्ययन करना
2. हिंदी लेखनी का विकास देवनागरी से आधुनिक प्रयोग का अध्ययन करना

लिपि विज्ञान के इतिहास की जानकारी से अवगत कराना

इसके अंतर्गत लिपि ज्ञान की प्राचीनता को व्यक्त किया गया है। प्राचीन काल में भारत वर्ष में लेखन कला का अज्ञान था, उस समय समस्त भारतीय वाङमय मौखिक परंपरा में सुरक्षित था। सिंधघाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह सिध्द हुआ है कि भारत में लेखन कला का आरंभ अथवा विकास उतना ही पुराना है, जितना कि सैंधव सभ्यता फिर भी लेखन की जानकारी भारत में लिपि विज्ञान प्रचलित ज्योति पुंज है। भारत की प्राचीन लिपि तथा उसकी प्राचीनतम सामग्री ग्रंथों के प्रमाण, शिलालेख, सिक्कों और मूर्तियाँ आदि से पता चलती है।

भारत की प्राचीन लिपियों से परिचित करना

भारत की प्राचीन लिपियों के अंतर्गत भारत में पहले सिंधुघाटी की लिपि, खरोष्ठी लिपि और ब्राम्ही लिपि का पता चला है। लिपियों का इतिहास काफी पुराना और दिलचस्प है। सर्वाधिक प्राचीन लिपि सिंधु लिपि है। भारत में प्राचीन काल से ही विभिन्न लिपियों का विकास समयानुसार परिवर्तनशील रहा है। सिंधुघाटी की लिपि अत्यंत प्राचीन है। इसी लिपि के प्राचीनतम नमूने हडप्पा और मोहनजोदडो की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। सिंधुघाटी लिपि के बाद दूसरी प्राचीन लिपि के रुप में खरोष्ठी लिपि का पता चलता है। ब्राम्ही प्राचीन काल में भारत की सर्वश्रेष्ठ लिपि रही है। हमारे देश की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं की लिपियों का उद्गम स्रोत भी ब्राम्ही लिपि रही है। क्योंकि भारत की भाषाओं की लिपियाँ ब्राम्ही की वंशज होने के कारण एक-दूसरे से मिलती-जुलती है। ब्राम्ही लिपि में जो वैज्ञानिकता थी, वही वैज्ञानिकता आज भी भारतीय लिपियों का आधार बनी हुई है।

देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास के बारे में जानकारी देना

इसमें देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास के बारे में जानकारी दी है। इसा की तिसरी शताब्दी तक ब्राम्ही लिपि सर्वाधिक प्रचलित रही है। नागरी या देवनागरी लिपि भी ब्राम्ही लिपि की संतति है। देवनागरी या नागरी का सम्बन्ध नागर ब्राम्हणो से माना जाता है। यह नागर ब्राम्हणों में प्रचलित लिपि होने के कारण नागरी कहलायी है। प्राचीन नागरी से आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, कैथी, राजस्थनी, मैथीली, बंगला, असमी आदि लिपियाँ विकसित हुई है। इस प्रकार ब्राम्ही से उत्तरी शैली से गुप्त लिपि और गुप्त से कुटिल लिपि विकसित हुई

है। कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी और बाद में आधुनिक देवनागरी का विकास हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि देवनागरी लिपि का विकास प्राचीनतम ब्राम्ही लिपि से हुआ है। इसका विकासक्रम ब्राम्ही लिपि – कुटिल लिपि नागरी लिपि देवनागरी लिपि है। गुजरात में १७ वी शताब्दी से देवनागरी का प्रचार था। विकासात्मक दृष्टि से पता चलता है कि नागरी के वर्णों में दसवीं शताब्दी से क्रमशः विकास होता रहा है। ग्यारहवीं शताब्दी की नागरी लिपि वर्तमान नागरी बन गई है। वास्तव में ग्यारहवीं शताब्दी से नागरी या देवनागरी लिपि का पर्याप्त विकास माना जाता है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करना

देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपि है। संपूर्ण संस्कृत साहित्य की रचना इसी लिपि में हुई है, चाहे वह साहित्य उत्तर भारत का हो या दक्षिण भारत का। देवनागारी अनेक आर्य भाषाओं की लिपि है। किसी भाषा की ध्वन्यात्मक प्रतिनिधित्व करनेवाली लिपि ही वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि कहलाती है। जब देवनागरी लिपि की तुलना संसार की अन्य लिपियाँ जैसे – रोमन, अरबी आदि से करते हैं, तो पता चल जाता है कि अन्य लिपियों की अपेक्षा देवनागरी में कुछ ऐसे गुण या विशेषताएँ हैं, जिनके फलस्वरुप उसे वैज्ञानिक लिपि कहा जाता है। देवनागरी लिपि सभी लिपियों की तुलना में अधिक सरल, शुध्द, स्पष्ट तथा देश की सांस्कृतिक परंपरा के अनुकूल है। इसमें संसार की लगभग सभी भाषा की भावाभिव्यक्ति को उच्चारित कर सकने की क्षमता है।

इसमें जो लिखा जाता है, उसका उच्चारण बिल्कुल वही किया जाता है। संसार की अब तक ज्ञात अन्य किसी भी लिपि में यह गुण पूर्ण रुप से नहीं मिलता। देवनागरी हमारे ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संस्कृति एवं कलाओं की संवाहक है। देवनागरी लिपि ही ऐसी एक मात्र लिपि है, जो विश्व की समस्त भाषाओं को लिखित रुप में व्यक्त कर सकती है। अतः देवनागरी की वैज्ञानिकता निसंदिग्ध है।

राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि के रूप में देवनागरी का महत्त्व प्रतिपादित करना

वास्तविकता यह है कि नागरी या देवनागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। इसका प्रयोग मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यों में सुगम है। देवनागरी लिपि की सुगमता, श्रेष्ठता, वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता, रुप सौष्ठव तथा स्वरयंत्रों की विभिन्न ध्वनियों को यथातथ्य लिपि बध्द करने की क्षमता देवनागरी लिपि में दिखाई देती है। देवनागरी अपने मात्रा-विधान, आकृति और व्यापकता के कारण निश्चित रुप से देश की राष्ट्रीय लिपि की आधिकारिणी है। यह पूर्णतः भारतीय लिपि है। इसकी उत्पत्ति और विकास दोनों ही भारत भूमि में हुए है। इस प्रकार इसकी जडे देश के इतिहास और संस्कृति में है। इसमें एक वर्ण के लिए एक ही ध्वनि मिलती है। जैसा लिखा जाता वैसा ही पढा जाता है। इसमें रोमन लिपि जैसी अनिश्चिता नहीं है। इसके प्रत्येक अक्षर का उच्चारण होता है। इसमें भाषाओं के आवश्यक ध्वनियों के लिए चिह्न विदयमान है। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट वर्ण दिखाई देता है। इसमें वर्णमाला के अक्षरों की संख्या पूर्ण है। 'विश्वकुटुम्बकम्' की भावना जगानेवाली देवनागरी लिपि सचमुच एक आदर्श लिपि और राष्ट्रीय एकता की सार्थक लिपि है।

राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि के रूप में देवनागरी का महत्त्व प्रतिपादित करना

वास्तविकता यह है कि नागरी या देवनागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। इसका प्रयोग मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यों में सुगम है। देवनागरी लिपि की सुगमता, श्रेष्ठता, वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता, रुप सौष्ठव तथा स्वरयंत्रों की विभिन्न ध्वनियों को यथातथ्य लिपि बध्द करने की क्षमता देवनागरी लिपि में दिखाई देती है। देवनागरी अपने मात्रा-विधान, आकृति और व्यापकता के कारण निश्चित रुप से देश की राष्ट्रीय लिपि की आधिकारिणी है। यह पूर्णतः भारतीय लिपि है। इसकी उत्पत्ति और विकास दोनों ही भारत भूमि में हुए है। इस प्रकार इसकी जडे देश के इतिहास और संस्कृति में है। इसमें एक वर्ण के लिए एक ही ध्वनि मिलती है। जैसा लिखा जाता वैसा ही पढा जाता है। इसमें रोमन लिपि जैसी अनिश्चिता नहीं है। इसके प्रत्येक अक्षर का उच्चारण होता है। इसमें भाषाओं के आवश्यक ध्वनियों के लिए चिह्न विदयमान है। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट वर्ण दिखाई देता है। इसमें वर्णमाला के अक्षरों की संख्या पूर्ण है। 'विश्वकुटुम्बकम्' की भावना जगानेवाली देवनागरी लिपि सचमुच एक आदर्श लिपि और राष्ट्रीय एकता की सार्थक लिपि है।

वास्तविकता यह है कि देवनागरी में भाषाओं की आत्मा का निवास है। यह वैज्ञानिक लिपि है और भावों को मूर्त रुप देने की इनमें अद्‌भूत क्षमता है। यही कारण है कि देवनागरी लिपि को हिन्दी, मराठी, सिंधी, डोंगरी, कोकणी, राजस्थानी, मगही एवं भोजपुरी आदि भाषाओं ने अपना लिया है और थोडे प्रयास से इसका बोध सहज संभव है। मुद्रा लेखन, टेलिप्रिंटर, तार आदि दैनिक व्यवहार के कार्यों में सुगम है। भारतीयता की दृष्टि से देवनागरी अत्यंत महत्त्वपूर्ण लिपि है। मध्य भारत की यह लिपि होने के कारण इसका महत्त्व और अधिक बढ जाता है।

निष्कर्ष

देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक, उपयोगी सरल और सुंदर लिपि है परन्तु इसमें कई दोष हैं। हमें इस लिपि के दोषों को दूर कर इस लिपि को गुणवान बनाने का प्रयास करना चाहिए। तभी यह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगी। देवनागरी लिपि उत्तर भारत के विभिन्न प्रांतों को ही नहीं जोडती, उत्तर एवं दक्षिण को भी जोडती है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और श्रेष्ठता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि में सीमित संशोधन से भारत वर्ष की समस्त भाषाएँ और जन-जातियों से सम्बन्धित बोलियों को सरलता से लिपिबध्द किया जा सकता है। इतना ही नहीं देवनागरी लिपि सीखने से अन्य भाषा-भाषी लोगों को लाभ भी मिलेगा। जैसे उर्दू भी चले और उसके साथ ही देवनागरी भी सीखें और सब भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ तो आपसी प्रेम और विश्वास बढ जाएगा। राष्ट्रीय लिपि के साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय लिपि के रुप में भी आज देवनागरी में अपार शक्ति और संभावनाएँ है।

संदर्भ सूची

1. डेनियल, पी. टी. और ब्राइट, डब्ल्यू. (सं.) 1996. विश्व की लेखन प्रणालियाँ। न्यू योर्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
2. ढोरे, एम.एल. एट अल, अक्टूबर 2013। हिंदी और मराठी से अंग्रेजी के लिए ऑर्थोग्राफी या ध्वनिविज्ञान द्वारा लिप्यंतरण: केस स्टडी। प्राकृतिक भाषा कंप्यूटिंग पर अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेएनएलसी) वॉल्यूम। 2. क्रमांक 5. लिंक- http://airccse.org/journal/ijnlc/papers/ 2513ijnlc01.pdf

3. फिशर, एस.आर. 2001. लेखन का इतिहास। लंदन: बीकशन बुक्स.
4. कुमार, वी. 1976. भारत में समितियाँ और आयोग 1947-73. खंड-II: 1955-57। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
5. लैम्बर्ट, एच.एम. 1953. देवनागरी लिपि का परिचय: संस्कृत और हिंदी के छात्रों के लिए। न्यू योर्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
6. माणक हिन्दी वार्तानी। 1980. नई दिल्ली: केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार
7. नाइक, बी.एस. 1971. देवनागरी खंड II की टाइपोग्राफी। बॉम्बे: भाषा निदेशालय, महाराष्ट्र सरकार।
8. राव, सी. एट अल. 2013. 'लिप्यंतरण में लागत'? रोमनकृत लेखन की तंत्रिका-संज्ञानात्मक चुनौती। मस्तिष्क और भाषा, खंड 124. 3 : 205-212।
9. रॉबिन्सन, ए. 2009. लेखन और पटकथा: एक बहुत संक्षिप्त परिचय। न्यू योर्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस
10. श्रीवास्तव, आर.एन. 1994. भाषा और भाषाविज्ञान में अध्ययन का अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान खंड 4। दिल्ली: कलिंगा प्रकाशन।
11. टेलर, आई. 2003. वर्णमाला का इतिहास: आर्य वर्णमाला भाग-2। व्हाइटफ़िश: केसिंजर प्रकाशन
12. परमेश्वरन पी.एन. (1970) राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव, प्रकाशन, आदर्श प्रेस, दिल्ली।
13. भाटिया, कैलाशचन्द्र, चतुर्वेदी, मौतीलाल (1686) हिन्दी भाषा विकास और स्वरूप, ग्रन्थ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. खन्ना, ज्योती (2001 प्रथम संस्करण), हिन्दी भाषा शिक्षण, धनपतराय प्रकाशन, नई दिल्ली ।
15. जैन, पी.सी. (2002) हिन्दी प्रयोग, एक शैक्षिक व्याकरण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
16. तिवारी, डा. भोलानाथ (संस्करण 2004) राज भाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
17. अग्रवाल, वी.एस. 1966. देवनागरी लिपि। भारतीय लेखन प्रणाली में, नई दिल्ली: प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।